

सूरह मुनाफिकून - 63

سُورَةُ الْمُنَافِقِينَ

सूरह मुनाफिकून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफिकों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत 9 से 11 तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफाक (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफिक के लक्षण तीन हैं: जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुखारी: 33, सहीह मुस्लिम: 59)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुखारी: 34, तथा सहीह मुस्लिम: 58)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफिक तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
لَكَاذِبُونَ ۝

मुनाफिक निश्चय झूठे^[1] हैं।

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।
3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ्र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।
4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगे उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई^[2] हुई। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध^[3] समझते हैं। वही शत्रु है, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं।

اتَّخَذُوا اِيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ
اِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُوْنَ

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ

وَ اِذَا رَاٰيْتَهُمْ تُنْبِكُ اَجْسَامُهُمْ وَ اِنْ يَقُوْلُوْا سَعٰى
لِقَوْلِهِمْ كَانَتْهُمْ حُسْبًا مُّسَدَّدَةً يَّحْسِبُوْنَ كُلَّ صِيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ هُمْ الْعَدُوْا وَ قَاخَذَرُوْهُمْ قَالَتْهُمْ اَللّٰهُ اَنْ يُّوْفٰى لَهُمْ

- 1 आदरणीय ज़ैद पुत्र अर्कम (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफिकों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे) को अवश्य निकाल देंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थात: ज़ैद पुत्र अर्कम) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे ज़ैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुखारी: 4900)

- 2 जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती है।

- 3 अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।
6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।
7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत खर्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (खजाने)। परन्तु मुनाफिक समझते नहीं हैं।
8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल^[1] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफिक जानते नहीं।
9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَتَخَفِرُوا لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوُوا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتُمْهُمْ يُصْذَوْنَ وَهُمْ يُسْتَكْبِرُونَ ⑤

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑥

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَيَّ مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا أَبْوَاطَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ⑦

يَقُولُونَ لَوْ لَمْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑨

1 सम्मानित: मुनाफिकों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानित: रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का^[1] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।
11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुखारी: 6442)